eISSN 2581-899
ONLI
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

जलवायु परिवर्तन के निराकरण में हरित ऊर्जा की प्रभावी भूमिका

प्रोफेसर शशिप्रभा तोमर[1]
[1]विभागाध्यक्ष– हिन्दी विभाग, बी.डी.एम.एम. गर्ल्स डिग्री कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद उ0प्र0

Received: 08 November 2025, Accepted: 20 November 2025, Published online: 30 November 2025

Abstract

जलवायु परिवर्तन विश्व की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या है। तापमान में भयंकर परिवर्तन, ऋतु परिवर्तन अर्थात् शीतकाल में ग्रीष्मता तथा ग्रीष्मकाल में शीत की अनुभूति ही जलवायु परिवर्तन है। यह प्रकृति के लिए एक चेतावनी है। मानवता के विकास के साथ–साथ भूमंडलीय तापमान में निन्तर वृद्धि हो रही है। जलवायु परिवर्तन विभिन्न संक्रामक रोगों हृदयरोग, फेफड़ों का कैंसर, स्ट्रोक, निमोनिया आदि के लिए भी उत्तरदायी है। समुद्री तरंगें, ज्वालामुखी विस्फोट, महाद्वीपों का खिसकना एवं पृथ्वी का झुकाव इसके प्रमुख कारक हैं। तापमान में वृद्धि व्यक्तियों के साथ–साथ जानवरों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इससे फसलों की उत्पादकता भी प्रभावित होती है। हजारों वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों द्वारा जलवायु परिवर्तन के सन्दर्भ में गम्भीरता पूर्वक गहन विश्लेषण कर इसके विनाशकारी दुष्प्रभावों के प्रति चिन्ता अभिव्यक्त की है। यहाँ तक कि व्यक्ति न्यायालय की भी शरण ले रहा है। जलवायु परिवर्तन के निराकरण में हरित ऊर्जा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके प्रमुख स्रोतों में सौर–ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल–विद्युत एवं भूतापीय ऊर्जा महत्वपूर्ण है। समय–समय पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेकानेक योजनाओं को निर्मित किया गया। पवन ऊर्जा संयंत्र की स्थापना की गई। राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC) को आठ राष्ट्रीय मिशन कोर के रुप में लागू किया गया। वास्तव में जलवायु परिवर्तन मानवजन्य भयावह समस्या है। यथासंभव वैकल्पिक ऊर्जा का उपयोग श्रेयस्कर है। हरित ऊर्जा एक ऐसा प्रभावकारी उपाय है, जिससे एक सुरक्षित, स्वच्छ एवं सुदृण भविष्य का निर्माण संभव है।

बीज शब्द :– जलवायु का अर्थ, जलवायु परिवर्तन की अवधारणा, जलवायु परिवर्तन के विभिन्न संघटक, जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम, जलवायु परिवर्तन में हरित ऊर्जा का महत्व, प्रभावी उपाय।

Introduction

वाह्य दशाओं एवं प्रभावों का योग ही परि+आवरण अर्थात् 'चारों ओर से घिरा' पर्यावरण ही है, जो मानव प्रकृति का अभिन्न अंग माना जाता है। जलवायु परिवर्तन विश्व की सवाधिक ज्वलंत पर्यावरणीय समस्याओं में एक समस्या के रूप में स्वीकार्य है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव नकारात्मक ही होता है। विगत वर्षों में तापमान में भयंकर परिवर्तन, ऋतु परिवर्तन अर्थात् शीतकाल में ग्रीष्मता तथा ग्रीष्म में शीत का अहसास ही जलवायु परिवर्तन है। पृथ्वी के इस असंतुलन के फलस्वरूप मानव जाति का भविष्य निरन्तर खतरे की ओर जा रहा है। सम्पूर्ण विश्वमानवता स्वयं बारुद के ढ़ेर पर बैठी दिखाई देती है। एक उर्दू शायर ने कहा है –

''सभी कुछ हो रहा है, इस तरक्की के जमाने में।
मगर ये क्या गजब है, आदमी इंसा नहीं होता।।''

(खुमार बाराबंकवी)

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 08, Special Issue 03, Nov 2025

विकसित भारत 2047: विकास की ओर एक पहल– ग्रामीण विकास एवं नगरीकरण की चुनौतियॉ

डॉ0 ममता भारद्वाज[1]
[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बी०डी०एम०म्यू० गर्ल्स डिग्री कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

Received: 08 November 2025, Accepted: 20 November 2025, Published online: 30 November 2025

Abstract

भारत 2047 तक अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण करेगा। भारत सरकार ने इस अवसर को अपना लक्ष्य बनाते हुए ''विकसित भारत 2047'' की परिकल्पना को प्रस्तुत किया है। यह केवल आर्थिक समृद्धि का कार्यक्रम नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकि, पर्यावरणीय और शासन से संबंधित समग्र परिवर्तन का दृष्टिकोण है। भारत की विकास यात्रा ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के सशक्तीकरण पर निर्भर करती है। एक ओर जहाँ ग्रामीण भारत को विभिन्न योजनाओं, रोजगार और उत्पादन में तेजी लाकर उसे आत्मनिर्भर बनाना आवश्यक है वहीं शहरीकरण की अनियोजित वृद्धि नई चुनौतियाँ उत्पन्न कर रही है। इस शोध पत्र में ग्रामीण विकास एवं नगरीकरण की चुनौतियों का विश्लेषण करते हुए, 2047 तक भारत के विकसित राष्ट्र बनने के मार्ग में आने वाले अवसरों और बाधाओं का विवेचन किया गया है।

सूचक शब्दः– विकसित भारत 2047, ग्रामीण विकास, नगरीकरण, सतत विकास, शहरी नियोजन, स्मार्ट ग्राम, डिजिटल इंडिया।

Introduction

भारत आज विश्व की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत सरकार ने 2047 तक इसे विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प ''अमृत काल'' के रूप में रखा है। विकसित भारत 2047 केवल आर्थिक सूचकांकों में प्रगति का संकेत नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समावेश, तकनीकी नवाचार, पर्यावरणीय संतुलन और सुशासन पर आधारित एक समग्र दृष्टिकोण है।

भारत की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में ही निवास करती है, जबकि नगरीकरण की दर में लगातार वृद्धि हो रही है। ऐसी स्थिति में ग्रामीण विकास और शहरीकरण के बीच संतुलन बनाए रखना भारत के विकास पथ का प्रमुख आधार है।

अनुसंधान के उद्देश्य– विकसित भारत 2047 की अवधारणा और नीति ढाँचे को समझना ।

- ग्रामीण विकास से संबंधित प्रमुख योजनाओं, उपलब्धियों और चुनौतियों का अध्ययन करना।
- नगरीकरण की वर्तमान स्थिति एवं उससे उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण करना ।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के समन्वित विकास के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति– यह शोध द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। सरकारी रिपोर्ट, नीति दस्तावेज, भारत सरकार की वेबसाइटें, जनगणना रिपोर्ट और विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रकाशित शोध पत्रों का विश्लेषण किया गया है।

1. **विकसित भारत 2047 की अवधारणाः–** ''विकसित भारत 2047'' का उद्देश्य भारत को सरकार का एक व्यापक विजन है, जिसका लक्ष्य भारत को वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाना है अर्थात वर्ष

RNI Regd. No. UTTBIL/2011/40666 ISSN: 2230-8938

ANUSANDHAN VATIKA

(An International Multidisciplinary Quarterly Bilingual
Peer Reviewed Refereed Research Journal)

✸ Vol 16 ✸ Issue 2 ✸ April-June 2026

भारतीय ग्रामीण समाज में बुजुर्गों की स्थिति का समाजषास्त्रीय विश्लेषण

डॉ. पिंकी

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बी.डी.एम.एम.गर्ल्स डिग्री कॉलेज, शिकोहाबाद, फिरोजाबाद

सारांश–

वृद्धावस्था एक सार्वभौमिक प्राकृतिक व जैविक प्रक्रिया है। मनुष्य के साथ–साथ पृथ्वी पर पाए जाने वाले प्रयास सभी जीव इस प्रक्रिया से गुजरते हैं। मानवीय जीवन को क्रमशः शैशवास्था ,बाल्यावस्था,किशोरावस्था,युवावस्था प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था में वर्गीकृत किया गया है। जीवन का आरंभिक काल ऊर्जा व गतिविधियों से भरा होता है किंतु धीरे–धीरे शारीरिक अंगों में शिथिलता, प्रकार्यात्मक क्षमता में कमी, विभिन्न बीमारियां तथा ट्रॉमा के तनाव से निपटने की क्षमता में कमी की ओर बढ़ने लगती है, जिससे समाज व सामाजिक संरचना भी प्रभावित होती है। इस संदर्भ में ग्रामीण भारतीय बुजुर्गों की बात करें तो भारतीय ग्रामीण समाज आज भी अपनी परंपराओं विश्वासों ,रीति–रिवाज और प्रथाओं को जीवंत बनाए रखे हुए हैं, जिसमें एक विशेषता उसकी संयुक्त परिवार प्रणाली है। संयुक्त परिवार बुजुर्गों के लिए किसी वरदान से काम नहीं है,हालांकि औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं वैश्वीकरण के इस दौर में संयुक्त परिवारों का विघटन अवश्य हुआ है किंतु खत्म नहीं हुए हैं बस वह अपने बदले हुए स्वरूप में आज भी प्रकार्यात्मक बने हुए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र ग्रामीण बुजुर्गों की सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है जिसका उद्देश्य बुजुर्गों की सामाजिक आर्थिक व पारिवारिक स्थिति तथा उत्पन्न चुनौतियों का अध्ययन व विश्लेषण करना है। शोध द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है तथा शोध शैली के अंतर्गत वर्णनात्मक शोध शैली व संरचनात्मकदृ प्रकार्यात्मक शोध परिप्रेक्ष्य का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण बुजुर्ग आज आर्थिक निर्भरता, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, सामाजिक उपेक्षा एवं भावनात्मक सुरक्षा जैसी समस्याओं व चुनौतियों का सामना कर रहे हैं हालांकि कुछ मामलों में बुजुर्गों की स्थिति अभी भी सम्मानजनक बनी हुई है, विशेषकर उन घर परिवारों में जहां परंपरागत मूल्य एवं सामाजिक नैतिकता मजबूत है।

मुख्य शब्दः ग्रामीण,बुजुर्ग, संयुक्त परिवार विघटन, परंपरा, नगरीकरण।

प्रस्तावना दृभारतीय समाज में बुजुर्गों की पारंपरिक रूप में सदैव विशिष्ट एवं सामान्य स्थिति रही है। वे अपने संचित ज्ञान से अपनी पीढ़ी एवं समाज के लिए दिशा निर्देशक, अनुभव, मूल्यों, मान्यताओं, परंपराओं व विश्वासों के संवाहक रहे हैं। भारत, अपनी प्राचीन दार्शनिक परंपराओं और वृद्धावस्था के प्रति सम्मान की सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ, सुखी वृद्धावस्था में योगदान देने वाले बिल्कुल अलग कारकों को प्रकट कर सकता है। सुखी वृद्धावस्था का अर्थ है– वर्तमान जीवन से संतुष्टि और मौजूदा परिस्थितियों से प्रसन्न और प्रसन्न मन की स्थिति। वर्तमान में भारत सर्वाधिक आबादी वाला देश है जिसमें बुजुर्गों की कुल आबादी 2011 की जनगणना के अनुसार 10.01% (13.8 करोड़) थी। बुजुर्गों की आबादी में वृद्धि दर सामान्य की तुलना में बहुत अधिक है। एक अनुमान के मुताबिक वर्ष 2036 तक भारत में बुजुर्गों की आबादी लगभग 23 करोड़ कुल आबादी का 15% होने की उम्मीद है वहीं। अगर हम लिंग के आधार पर बात करें तो बुजुर्ग महिला आबादी पुरुषों से अधिक है (67 मिलियन पुरुष और 71 मिलियन महिलाएं)।

भारत में औपचारिक क्षेत्र में सेवानिवृत्ति की आयु 55 से 65 वर्ष के बीच है (राजन, 2010) किंतु अनौपचारिक क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए ऐसी कोई सेवानिवृत्ति आयु निर्धारित नहीं है। अगर ग्रामीण क्षेत्र की बात की जाए तो अधिकांश निवासी असंगठित क्षेत्र से ही जुड़े होते हैं और उनके सेवानिवृत्ति की कोई आयु निर्धारित नहीं होती है क्योंकि गांव परंपरागत व्यवसायों के लिए जाने जाते हैं और युवा पीढ़ी इन परंपरागत व्यवसायों को करने में बहुत अधिक दिलचस्पी नहीं लेती है। ऐसी स्थिति में ऐसे सभी कार्य परिवार के बुजुर्गों को ही देखने पड़ते हैं। यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण वृद्ध असाध्य रोग अथवा अत्यधिक गंभीर बीमारी की अवस्था में ही सेवानिवृत्त होता है अन्यथा

भारतीय पारिवारिक संरचना में उदीयमान आधुनिक प्रवृत्तियां: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 पिंकी
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बी0डी0एम0म्यू0 गर्ल्स डिग्री कॉलेज शिकोहाबाद

सारांश

परिवार समाज की एक मूलभूत एवं सार्वभौमिक सामाजिक संस्था है, जो अपने सदस्यों के समाजीकरण तथा सामाजिक मूल्यों और मानदंडों के संचरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परंपरागत रूप से भारतीय पारिवारिक संरचना का स्वरूप संयुक्त रहा है, जिसमें सामूहिकता, पारस्परिक सहयोग, पीढ़ीगत एकता तथा सामाजिक, आर्थिक एवं भावनात्मक सुरक्षा के तत्व प्रमुख रहे हैं। आई ०पी ०देसाई एवं ए०एम शाह जैसे समाजशास्त्रियों ने भारतीय परिवार को एक लचीली संस्था के रूप में रेखांकित किया है, जो सामाजिक परिवर्तनों के साथ स्वयं को अनुकूलित करती रही है।

वर्तमान समय में औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के प्रसार, रोजगार के नए अवसरों, महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में परिवर्तन, सूचना प्रौद्योगिकी तथा वैश्वीकरण के प्रभावों के परिणामस्वरूप भारतीय परिवार तीव्र संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं। इन परिवर्तनों के कारण परिवार की संरचना, आकार, संबंधों तथा मूल्यों में नई आधुनिक प्रवृत्तियाँ उभरकर सामने आई हैं। कृषि से सेवा क्षेत्र की ओर स्थानांतरण, महिलाओं की आर्थिक उपार्जन में बढ़ती भागीदारी, पितृसत्तात्मक संरचना में आंशिक शिथिलता, विवाह और तलाक के बदलते स्वरूप, एकाकी एवं एकल परिवारों की बढ़ती संख्या तथा बुजुर्गों में एकाकीपन की समस्या जैसी प्रवृत्तियाँ भारतीय परिवारों को नए सिरे से परिभाषित कर रही हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य भारतीय पारिवारिक संरचना में उभरती आधुनिक प्रवृत्तियों के कारणों एवं उनके सामाजिक प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। यह शोध पत्र वर्णनात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है तथा द्वितीयक स्रोतोंकृपुस्तकों, शोध पत्रों, रिपोर्टों एवं उपलब्ध सांख्यिकीय आँकड़ोंकृके माध्यम से विषय का अध्ययन करता है। यह अध्ययन भारतीय परिवारों में हो रहे संरचनात्मक एवं मूल्यगत परिवर्तनों को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

मुख्य शब्द: *पारिवारिक संरचना, आधुनिकीकरण, संयुक्त एवं एकाकी परिवार, लैंगिक भूमिका, वैश्वीकरण।*